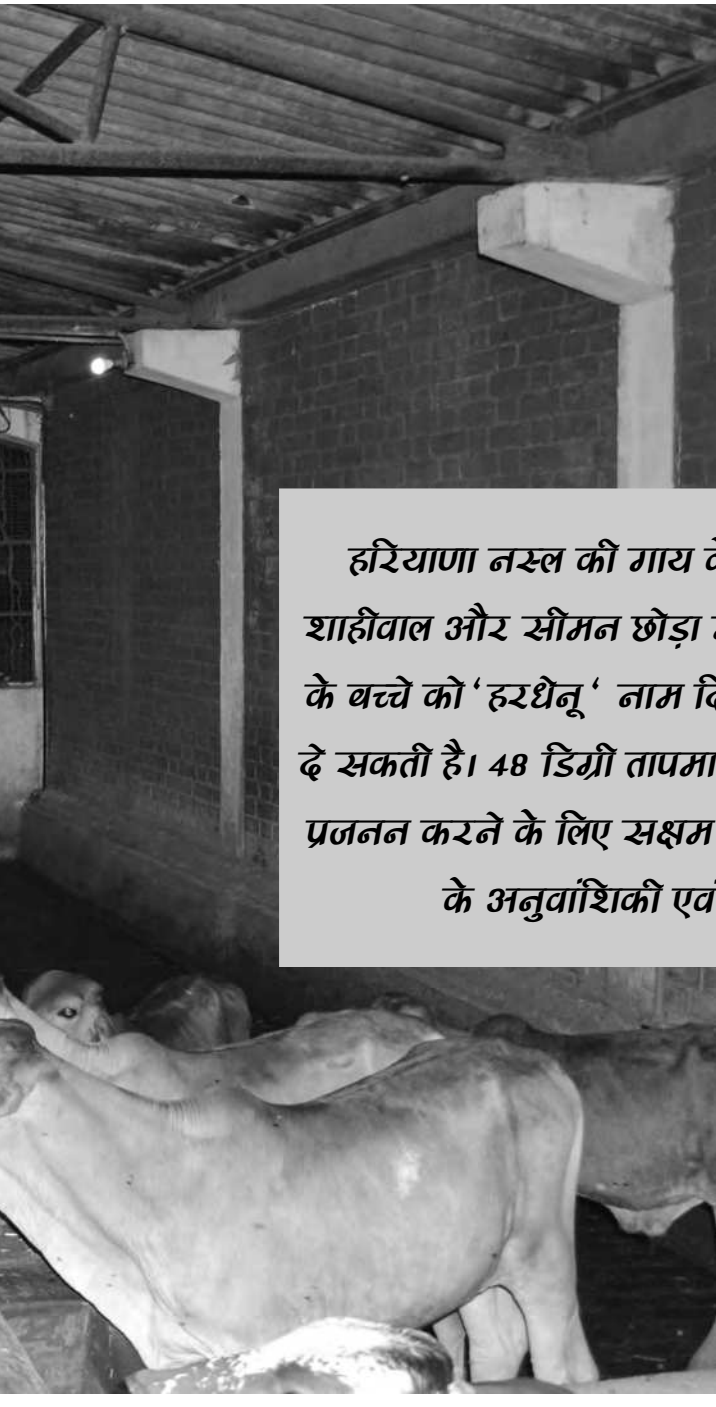

हरियाणा नस्ल की गाय के अंदर यूएसए व कनाडा की हॉलस्टीन, शाहीवाल और सीमन छोड़ा गया। तीन नस्लों के मेल से तैयार हुए गाय के बच्चे को 'हरधेनू' नाम दिया गया। हरधेनू 50 से 55 लीटर तक दूध दे सकती है। 48 डिग्री तापमान में सामान्य रहती है। यह 18–19 माह में प्रजनन करने के लिए सक्षम है। यह संभव किया हिसार के लुवास विवि के अनुवांशिकी एवं प्रजनन विभाग के वैज्ञानिकों ने।

इसी उदेश्य को लेकर पंचगव्य का उत्पादन किया जा रहा है। यह रज़्तचाप, मधुमेह, मोटापा, उदर सज़्बन्धी विकार शारीरिक व्याधियों का समाधान करता है। इसके अलावा दैनिक जीवनोपयोगी सामग्री जैसे शैज़्पू, साबुन, दन्तमंजन, फिनायल का भी सुगमता से उत्पादन एवं उपयोग किया जा रहा है। इससे होने वाली आय से अल्पोत्पादक गायों के रख–रखाव में होने वाले व्यय में सहयोग मिल रहा है। दीनदयाल शोध संस्थान, गोवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र आरोग्यधाम चित्रकूट में पंचगव्य उत्पादन का पन्द्रह दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण भी उपलज़्ध कराया जा रहा है। चित्रकूट के किसी भी आश्रम–अखाड़े में देसी गाय के अलावा विदेशी गाय या भैंस को आश्रय नहीं दिया जाता। दीनदयाल शोध संस्थान ने 1995 से चित्रकूट के आश्रमों द्वारा संचालित गौशालाओं में आश्रय प्राप्त गोवंश की